परिवार सशक्तिकरण आंचलिक कार्यशाला का शुभारंभ

आचार्य महाप्रज्ञ ने बताये सशक्त परिवार के सूत्र

श्रीडूँगरगढ़, 22 दिसम्बर : विश्वास, स्नेह के अभाव में परिवार, धार्मिक संगठन एवं राजनीतिक पार्टियां बिखर रही हैं। धन, पदार्थ और सत्ता के प्रति मूर्छा के कारण एक दूसरे के प्रति वैरभाव पैदा हो रहा है। परिवार, समाज, राष्ट्र को सशक्त बनाने के लिए विश्वास, आकांक्षा रहित होना मूढ़ता से दूरी, वात्सल्य, स्थिरीकरण, सद्गुणों को वृद्धिगत करने का चिंतन और संगठन की प्रभावना करने का मानस होना चाहिए।

उक्त विचार आचार्य महाप्रज्ञ ने अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल के तत्वावधान में स्थानीय तेरापंथ महिला मण्डल द्वारा आयोजित परिवार सशक्तिकरण आँचलिक कार्यशाला के शुभारम्भ अवसर पर व्यक्त किये। इस कार्यशाला में 20 क्षेत्रों से 155 बहिनों ने भाग लिया।

आचार्य महाप्रज्ञ ने संभागी महिला मण्डलों और जनसमुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि अकेला रहना कठिन है इसीलिए परिवार की संरचना हुई। परिवार सामाजिक जीवन की पहली इकाई है। अगर परिवार में संदेह का वातावरण रहता है तो परिवार का सुख चैन छिन जाता है। उन्होनें कहा कि आज सामूहिक परिवार से किसी का मन उखड़ जाये तो उसको स्थिर करने वाला कोई बुद्धिमान व्यक्ति नहीं रहा है और मूढ़ता के कारण विवेक समाप्त होता जा रहा है। आचार्य महाप्रज्ञ ने परिवार, समाज, धर्मसंघ एवं राजनीतिक संगठनों आदि सभी जगहों पर पारस्परिक विश्वास को जरूरी बताया और अपनी कृति - हेप्पी एण्ड हामोनियस् फैमेली एवं अनेकांत है तीसरा नेत्र को सशक्त परिवार निर्माण के लिए पढ़ने की प्रेरणा दी।

युवाचार्य महाश्रमण ने पारिवारिक जीवन में प्रशिक्षण को आवश्यक बताते हुए कहा कि विवाह एक दीक्षा है। सन्यास दीक्षा में वैराग्य की दृष्टि से महत्व होता है और विवाह दीक्षा का गृहस्थ जीवन की दृष्टि से महत्व है। विवाह के बाद ही गृहस्थ जीवन में प्रवेश होता है। उन्होंने कहा कि परिवार व्यवस्था की दृष्टि से अलग-अलग रहे उसमें कोई बुराई नहीं है, परन्तु मन की दूरियां बढ़ जाती है तो घातक हो सकती है। परिवार के सशक्तिकरण के लिए लगाव जरूरी है। जहां बीमार वृद्ध के प्रति लगाव नहीं होता है वहां संयुक्त रहते हुए भी परिवार अशक्त बन जाता है। उन्होंने काम और क्रोध को परिवार में बिखराव पैदा कराने वाले तत्व बताते हुए कहा कि समृद्धि, सौहार्द और सेवा परिवार को मजबूती प्रदान करते हैं।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने कहा कि स्नेह का धागा जितना मजबूत रहता है उतना ही परिवार सशक्त बनता है। घर वह होता है जहां सौहार्द होता है, एक दूसरे के देखभाल की जाती है। जिस परिवार में केयर और शेयर की प्रणाली होती है उस परिवार में आनन्द की अनुभूति होती है। उन्होने कहा कि एकल परिवार में रहने वालों से ज्यादा संयुक्त परिवार के सदस्य खुश रहते हैं। सशक्त परिवार से समाज और राष्ट्र का भविष्य सुखद होता है। अखिल भारतीय महिला मण्डल की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमति कनक बरमेचा ने कार्यशाला की रूपरेखा पर प्रकाश डाला। राष्ट्रीय महामंत्री श्रीमति वीणा बैद ने बताया कि स्वस्थ परिवार स्वस्थ समाज के सूत्र पर सम्पूर्ण भारत में 14344 कार्यशालाओं का आयोजन किया जा चुका है। स्थानीय मण्डल की अध्यक्षा श्रीमति झिणकार देवी बोथरा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। श्रीमति बोथरा एवं मण्डल की उपाध्यक्षा श्रीमति राजूदेवी लूणियां, कोषाध्यक्षा श्रीमति दीपमाला डागा, परामर्शदात्री श्रीमति सीरू देवी सेठिया ने पूज्यवरों एवं राष्ट्रीय अध्यक्षा, महामंत्री को कार्यशाला की किट भेंट की। कार्यक्रम का मंगलाचरण महिला मण्डल की बहिनों ने एवं संचालन मण्डल की मंत्री श्रीमति संगीता दूगड़ ने किया।

प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षण कक्षाएं प्रारम्भ

आचार्य महाप्रज्ञ एवं युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य एवं प्रेक्षाध्यापक मुनि किशनलाल के निर्देशन में प्रातः 7 बजे तक प्रेक्षाध्यान एवं योग की कक्षाओं का शुभारम्भ हुआ। मुनिवरों ने बताया कि प्रेक्षाध्यान व्यक्तित्व रूपांतरण का सशक्त माध्यम है। इसके प्रयोगों से तनाव से उत्पन्न होने वाली बीमारियों एवं असद् आदतों में बदलाव किया जा सकता है। इन कक्षाओं में समण सिद्ध प्रज्ञ एवं जीवन विज्ञान के प्रेक्षाध्यापक वी.एन. पाण्डे के द्वारा प्रेक्षाध्यान, आसन प्राणायामका प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रेक्षाध्यान और योग साधना के संयोजक राजेन्द्र पुगलिया ने छुट्टियों के अवसर पर छात्रों एवं योग के इच्छुक लोगों को इन कक्षाओं का लाभ लेने का आह्वान किया।